दैनिक भास्कर

भारत का सबसे बड़ा समाचार पत्र समूह

सेंसेक्स	16775.87 ↓	
पिछला 16882.67		अंतर 106.80
निफ्टी	5030.45 ↓	
पिछला 5068.50		अंतर 38.05
सोना	29400.00 ↑	
पिछला 29300.00		अंतर 100.00
चांदी	57,800.00 ↑	
पिछला 57000.00		अंतर 800.00
डॉलर	50.74 ↓	
पिछला 50.67		अंतर 0.07

m गुरुवार बिलासपुर • 17 नवंबर, 2011 मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष 6, 2068

10 ईडन भी मुट्ठी में

104 रुपए महीने में 2 साल तक जबरन काम कराया

» प्लेसमेंट एजेंसियों के चंगुल से छूटी दो बच्चियों की दास्तां » मां-बाप से बात करने को तरसतीं रहीं 2 साल तक

विक्रांत पाठक, जशपुरनगर

जशपुर से मानव तस्करी का एक और मामला सामने आया है। दलाल ने 15 व 16 वर्ष की दो बच्चियों को दिल्ली ले जाकर प्लेसमेंट एजेंसी के हवाले कर दिया था, जिसके बाद से उन्हें प्रताड़ित किया जा रहा था। दो साल बाद एक समाजसेवी संस्था की पहल पर उनके चंगुल से छूटकर ये बच्चियां यहां पहुंची। इन्हें कहा गया था कि हर महीने 12सौ रुपए दिए जाएंगे लेकिन दो साल में कुल रकम ढाई हजार रुपए ही दिए। इस तरह मात्र 104 रुपए प्रति माह इन्हें मिले।

ग्राम ठूठीअंबा की 3 री व 4थी कक्षा तक पढ़ी दो किशोरियों को दो साल पहले एक दलाल दिल्ली ले गया था। दोनों को एक समाजसेवी संस्था आदिवासी महिला महासंघ के प्रयास दिल्ली से वापस लाया गया। वापस आने के बाद इन्होंने जो बताया, वह सिहरन पैदा करने वाला है। शेष | पेज-8

दिल्ली से लौटी किशोरियां अपनी मां के साथ।

क्यों नहीं करते रिपोर्ट

बच्चों के चले जाने के बाद मां-बाप रिपोर्ट तक नहीं लिखाते। इसकी वजह उन्हें मिलने वाली धमकियां हैं। प्लेसमेंट एजेंसियों के दलाल ये धमकियां देते हैं कि उनके बच्चों से वे फिर कभी नहीं मिल पाएंगे।

11 में से 10 लड़कियों को लाया गया वापस

ठूठीअंबा गांव से 11 लड़कियों को अलग-अलग समय में दलाल दिल्ली व अन्य महानगरों में ले गए थे। जहां उन्हें प्लेसमेंट एजेंसी के जरिए से काम पर लगाया गया था। हमने 10 लड़कियों को वापस लाने में सफलता पाई है।

ममता कुजूर, आदिवासी महिला महासंघ

नहीं देते थे पैसा

तीसरी तक पढ़ी किशोरी ने बताया कि उसे दिल्ली में एक व्यक्ति के यहां बच्चे खिलाने के काम पर रखा गया था। इसके एवज में हर महीने 12 सौ रुपए देने की बात कही गई थी, पर उसे हर महीने पैसे नहीं मिलते थे। जहां वह काम करती थी, वहां के मालिक भी उसे कपड़े या पैसे नहीं देते थे। जबकि प्लेसमेंट एजेंसी के लोग हर महीने आकर पैसे ले जाते थे। उसे दो साल में केवल ढाई हजार रुपए ही दिए गए। कभी परिवार वालों से संपर्क करने का प्रयास करते थे तो उन्हें धमकी दी जाती थी। हालांकि उन्होंने अपने साथ किसी प्रकार की मारपीट या शारीरिक शोषण से इनकार किया। वह बीते रविवार को आदिवासी महिला महासंघ के प्रयास से वापस गांव पहुंची।

बहन आंध्रप्रदेश में

दिल्ली से लौटी चौथी कक्षा तक पढ़ी किशोरी ने बताया कि उसे दो साल पहले सितंबर में मंगरा व सुखसाय दिल्ली ले गए थे। घर में मां-बाप के अलावा 2 भाई व एक बहन है। उसने बताया कि एक भाई बड़ा व एक छोटा है। उसकी बहन को भी एक दलाल ने इसी तरह काम दिलाने का लालच दिया और आंध्रप्रदेश ले गया, जो अभी भी वहीं है। इस छात्रा ने बताया कि उसे दिल्ली के एक घर में झाड़ू-पोंछा लगाने के काम में लगाया गया था। उसे कहा गया था कि हर महीने 15 सौ रुपए मिलेंगे, पर दो साल में उसे केवल ढाई हजार रुपए ही मिले।